पंजीकरण फार्म

नाम:श्री0/कु0/डा0/प्रो0: .....

.....

शीर्षक.....

.....

पदनाम:.....

विश्वविद्यालय/संस्थान/कालेज:.....

.....

.....

डी.डी. न0/नगद .....

फोन नम्बर: .....

मोबाइल नं0:.....

फैक्स कोड: ..... नम्बर:.....

ई.मेल:.....

दिनांक.....

प्रतिभागी के हस्ताक्षर

,

डिमाण्ड ड्राफ्ट : वित्त आधिकारी, उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद के पक्ष में देय होगी।

संरक्षक

प्रो0 एम0 पी0 दुबे

कुलपति

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

संयोजक

डॉ0 एम0 एन0 सिंह

निदेशक

समाज विज्ञान विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

सह-संयोजक

डॉ0 जे0 एस0 सिंह

एसो0 प्रोफेसर, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आयोजन सचिव

डॉ0 दीपशिखा श्रीवास्तव

समाज विज्ञान विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आयोजन उपसचिव

श्री रमेश चन्द्र यादव

डॉ. अलका वर्मा

समाज विज्ान विद्या शाखा, उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

राष्ट्रीय संगोष्ठी

मोहन से महात्मा तक की यात्रा

02,03 मार्च- 2016
(बुधवार-बृहस्पतिवार)

आयोजक
समाज विज्ञान विद्याशाखा

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

आयोजन स्थल
सरस्वती परिसर

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय,
शान्तीपुरम् (सेक्टर-एफ),फाफामऊ
इलाहाबाद - 211013 (उ0प्र0)

मोबाईल न0 :- 07525048034, 9451846407, 07525048003
दूरभाष :- 0532-2447001,
E- mail :msmuprtou@rediffmail.com
Website: www.uprtou.ac.in

संगोष्ठी के बारे में

महात्मा गाँधी का जीवन दर्शन मनुष्य जाति के लिए प्रेरणा का प्रमुख स्रोत है। वर्तमान में समस्त मानव समाज युद्ध, आतंक, घृणा और हिंसा की आग में जल रहा है। ऐसे में गाँधी जी का दर्शन हमें शान्ति, सुरक्षा और प्रेम का मार्ग दिखाता है। वर्तमान वैश्विक परिप्रेक्ष्य में महात्मा गाँधी के जीवन और चिन्तन की उपादेयता और भी अधिक बढ़ गई है। महात्मा गाँधी के नेतृत्व में अँग्रेजों के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई लड़ी गयी। दांडी मार्च, असहयोग आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन जैसे राजनीतिक आन्दोलन किये गये। उन्होंने समाज में फैली बुराईयों जैसे अस्पृश्यता, छुआ-छूत, जाति-पाँति तथा सामाजिक असमानता को दूर करने का प्रयास किया। सत्य, अहिंसा और प्रेम उनके अमोघ अस्त्र थे। जिनके आधार पर उन्होंने मानव समाज को नई राह दिखाई। इन्हीं सिद्धान्तों के बल पर उन्होंने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा अन्य मोर्चो पर भी लड़ाइयाँ लड़ी। अन्ततः अथक प्रयासो के पश्चात् भारत को आजादी प्राप्त हुई। गाँधी जी ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने अपने जीवन में यदि गलतियाँ भी की तो उन्हें स्वीकार करने में तत्परता भी दिखाई। उन्होंने अपना पूरा जीवन सादगी में गुजारा। उनके महान व्यक्तित्व से प्रभावित हो कर रवीन्द्र नाथ टैगोर ने उन्हें महात्मा कह कर सम्बोधित किया जिसके फलस्वरूप वे आज महात्मा गाँधी के नाम से लोक प्रिय हैं। २ अक्टूबर को भारत में गाँधी जयंती व पूरे विश्व में अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रुप में मनाया जाता है। आज जब अपसंस्कृति का दौर बाजारवाद के साथ मनुष्य की अस्मिता की रक्षा करने में और उसके अस्तित्व को सुरक्षित रखने में अक्षम सिद्ध हो रहा है तब महात्मा गाँधी के सिद्धान्त वर्तमान विश्व के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त बन सकते हैं।

संगोष्ठी के आयोजन का उद्देश्य गाँधी जी के विचारों व दर्शन से जनमानस को विषेशकर युवा वर्ग को अवगत करा कर वैश्विक स्तर की विभिन्न समस्याओं का समाधान करना है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर व्याप्त पर्यावरण संरक्षण एवं ग्लोबल वार्मिंग, समावेशी विकास की निरन्तर बढ़ती माग, बेराजगारी, भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं को दूर करने की दृष्टि से भी गाँधी जी के मूल्यों, सिद्धान्तों तथा व्यवहारिक दर्शन का अध्ययन और भी प्रासंगिक हो गया है। वर्तमान में इन्हीं समस्याओं को दूर करने में गाँधी दर्शन में निहित सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं आधुनिक अन्तर्राष्ट्रवाद आदि से सम्बन्धित अवधारणाओं के द्वारा समुचित समाधान ढूँढा जा सकता है। अतः वर्तमान वैश्विक स्तर के इस दौर में तेजी से परिवर्तित हो रही वैश्विक परिस्थितियों में गाँधी विचार और शांती अध्ययन अपरिहार्य हो चुका है।

संगोष्ठी के महत्त्वपूर्ण विषय निम्नवत हैं:

1. महात्मा गाँधी : विविध आयाम (1869-2016)
2. महात्मा गाँधी : पूर्व और पश्चिम का प्रभाव
3. महात्मा गाँधी : दक्षिण अफ्रीका में
4. सत्याग्रह का उदय
5. महात्मा गाँधी : भारत में (1915-1948)
6. महात्मा गाँधी और विश्व-शान्ति
7. महात्मा गाँधी और भूमण्डलीकरण
8. महात्मा गाँधी और संयुक्त राष्ट्र संघ
9. महात्मा गाँधी और लैंगिग समानता, मानवाधिकार, पर्यावरण और दलित
10. महात्मा गाँधी : एक सफल प्रबन्धक के रूप में
11. अर्थशास्त्रीय स्वावलम्बन एवं आत्मनिर्भरता के अग्रदूत
12. रचनात्मक कार्यक्रम और गाँधी
13. महात्मा गाँधी और पत्रकारिता
14. महात्मा गाँधी जी की प्रासंगिकता : वर्तमान परिप्रेक्ष्य में
15. लोकतांत्रिक मूल्य और महात्मा गाँधी के सिद्धान्त

संभावित प्रतिभागी

शोध-छात्र, प्रध्यापक, संकाय सदस्य (फेकल्टी-मेम्बर्स) तथा इस पृष्ठ-भूमि से सम्बन्धित विद्वान आदि।

संगोष्ठी के बारे में सूचना

संगोष्ठी के बारे में विस्तृत सूचना बेवसाइट www.uprtou.ac.in के माध्यम से प्राप्त सकते हैं।

महत्त्वपूर्ण तिथियाँ

शोध सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 15 फरवरी 2016

पूर्ण शोध पत्र भेजने की अंतिम तिथि: 25 फरवरी 2016

पंजीकरण शुल्क

शैक्षिक विद्वान/प्रध्यापक / शोध छात्र : रू0 500.00

यात्रा भत्ता/भोजन एवं ठहरने के लिए

प्रतिभागी अपनी यात्रा/आवासीय व्यवस्था का खर्च स्वयं वहन करेंगें। उ० प्र० राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद द्वारा केवल जलपान, मध्यान्ह भोजन एवं सायंकालीन सुक्ष्म जलपान की व्यवस्था उपलब्ध होगी। आमंत्रित विद्वानों/विशेषज्ञों को ही यात्रा-भत्ता एवं अन्य सुविधायें उपलब्ध होगी।

विश्वविद्यालय के बारे में

उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद की स्थापना उत्तर प्रदेश राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद अधिनियम वर्ष १९९९ उत्तर प्रदेश (अधिनियम संख्या १०,१९९९) के अन्तर्गत हुई। इस विश्वविद्यालय को दूरस्थ शिक्षा योजना के अन्तर्गत एक मुक्त विश्वविद्यालय बनाया गया। जिसकी स्थापना उच्च शिक्षा के प्रचार प्रसार हेतु की गयी है। राज्य की समृद्धि के लिए शिक्षा, अनुसंधान, प्रशिक्षण और राज्य के मानव संसाधन विस्तार में एक सकारात्मक भूमिका अदा करने, प्रदेश की आबादी के अधिसंख्य जनसमुदाय तक उच्च शिक्षा की पहुँच प्रदान करता है, जिसमें कि विशेष रूप से काम कर रहे लोगों, कार्योजित महिलाओं, वंचित समूहों के वयस्कों को उच्च शिक्षा प्रदान करना है। विगत १५ वर्षों में विश्वविद्यालय ने अनेक प्रशंसनीय एवं पर्याप्त शैक्षिक क्षैतिज पर ऊर्ध्वाधर वृद्धि की है। विश्वविद्यालय ने दूरस्थ शिक्षा को और अधिक आधुनिक एवं तकनीकी युक्त बनाने के लिए उपग्रह प्रणालियों, वीडियो कान्फ्रेंसिंग, ऑन-लाइन प्राणाली, के माध्यम से शिक्षार्थियों के ज्ञान में अभिवृद्धि सूचना एवं तकनीकी के प्रयोग का प्रबन्ध किया है जिससे की सुदूर ग्रामीण अंचल के शिक्षार्थी भी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के योग्य बन सके। वर्तमान में विश्वविद्यालय में स्नातक एंव स्नात्कोत्तर के अतिरिक्त अनेक कौशल विकास के उपयोगी एवं रोजगार परक कार्यक्रम संचालित है। विश्वविद्यालय में समाज विज्ञान विद्याशाखा के अर्न्तगत गाँधी विचार एवं अध्ययन, उपभोक्ता संरक्षण एवं ग्रीन सोशल वर्क जैसे महत्वपूर्ण विषयों का संचालन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय सम्पूर्ण प्रदेश में ज्ञान का प्रकाश फैलाने एवं अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने की दिशा में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

आयोजन समिति

1. डॉ. इति तिवारी, समाज विज्ञान विद्याशाखा
2. डॉ. संतोष कुमार, समाज विज्ञान विद्याशाखा
3. डॉ. रुचि बाजपेई, मानविकी विद्याशाखा
4. डॉ. श्रुति, विज्ञान विद्याशाखा
5. डॉ. रंजना श्रीवास्तव, शिक्षाविद्याशाखा
6. डॉ. रिंगता अग्रवाल, मानविकी विद्याशाखा
7. डॉ. सतीश चन्द्र कलौनिया, समाज विज्ञान विद्याशाखा

सलाहकार समिति:

१. डॉ, एस. पी. गुप्ता, निदेशक, शिक्षाविद्याशाखा
२. डॉ. ओम जी गुप्ता, निदेशक, प्रबन्धन विद्याशाखा
३. डॉ. पी. पी. दुबे, निदेशक, कृशि, विज्ञान विद्याशाखा
४. डॉ. आर. पी. एस. यादव, प्रभारी, मानविकी विद्याशाखा
५. डॉटीएन. दुबे, पुस्तकालयाध्यक्ष, मानविकी विद्याशाखा
६. श्री डीपी. त्रिपाठी, कुलसचिव, उप्रराटमुविवि. इ.